Tender Heart High School, Sector-33-B, Chandigarh.

कक्षा - दसवीं

विषय - हिन्दी व्याकरण

शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : सरस हिन्दी व्याकरण नौं एवं दस

उपविषय : लोकोक्तियाँ

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा दसवीं की हिन्दी व्याकरण की पाठ्य-पुस्तक सरस हिन्दी व्याकरण भाग नौं एवं दस की पृष्ठ संख्या 316 पर दी 'लोकोक्तियों' को पढ़ेंगे।

बच्चो ! आज हम 'लोकोक्तियाँ' पर चर्चा करने जा रहे हैं इसलिए आप अपनी-अपनी पुस्तक तथा उत्तर-पुस्तिका निकाल लें और पढ़ने के लिए तैयार हो जाएँ। विषय पर चर्चा करते-करते आपसे इनसे संबंधित कुछ प्रश्न भी पूछे जाएँगे। आपको तीन मिनट के अन्तर्गत ही उन प्रश्नों के उत्तर लिखने होंगे। उत्तर आप तभी लिख पाएँगे यदि आप ध्यानपूर्वक सुनेंगे व समझेंगे। आशा करती हूँ कि अब आप पढ़ने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

बच्चो ! आइए सबसे पहले लोकोक्तियों के बारे में जानकारी प्राप्त कर लेते हैं।

'लोकोक्ति' शब्द लोक + उक्ति से मिलकर बना है। लोकोक्तियाँ सामाजिक जीवन के अनुभव के आधार पर

बनती है। हम इनका प्रयोग आवश्यकता के अनुसार करते हैं। कहीं किसी कथन की पुष्टि के लिए तो कहीं उपदेश देने के लिए लोकोक्तियों का प्रयोग प्रभावकारी सिद्ध होता है।

'लोकोक्तियाँ' मुहावरे की भाँति वाक्य का अंग नहीं होती। ये प्रायः पूर्ण वाक्य होती हैं। इन्हें कहावत भी कहते हैं। लोकोक्तियाँ विशेष संदर्भ में प्रयुक्त होती हैं और इनका विशेष अर्थ ही लिया जाता है; जैसे :-

'कोयल होय न ऊजरी, सौ मन साबुन लाय'

अर्थात् कोयला अंदर और बाहर से काला होता है, उसे सौ मन साबुन लगा कर पानी से धोया जाए तब भी कोयला ऊजला होने वाला नहीं है इसी प्रकार मूर्ख मनुष्य को ज्ञान उपदेश दिया जाए तो वह उससे लाभ लेनेवाला नहीं उलटा इसका दुरुपयोग ही करेगा। इस लोकोक्ति में 'कोयल' उसके जन्मजात गुण कालापन को प्रकट करता है। 'ऊजली होना' इस गुण के परिवर्तन को प्रकट करता है और 'सौ मन साबुन लाय' विभिन्न उपायों का बोध कराता है। यही विशेष अर्थ है। पूरी लोकोक्ति का अर्थ है 'भिन्न भिन्न उपायों से भी व्यक्ति के जन्मजात गुण या अवगुण को नहीं बदला जा सकता।

बच्चो! अब आपकी पुस्तक में दी गई लोकोक्तियों पर चर्चा करते हैं। कक्षा नौवीं में आपने एक से पैंतीस तक कर ली हैं। अब हम आगे की लोकोक्तियों को पढ़ेंगे। आप सभी इसी प्रकार ध्यानपूर्वक सुनेंगे व समझेंगे।

- **जिसकी लाठी उसकी भैंस** - शक्तिशाली की ही जीत होती है गाँव के प्रधान ने पहले तो सूरज की ज़मीन छीन ली, फिर उसे चोरी के इलज़ाम में जेल भिजवा दिया। सच ही है जिसकी लाठी, उसकी भैंस।

- जाको राखे साइयाँ मार सके न कोय - जिसका रक्षक स्वयं ईश्वर हो, उसे कोई हानि नहीं पहुँचा सकता
वाक्य - चालीस फुट की ऊँचाई से बस गिरने पर सभी यात्री मर गए, परन्तु एक छह माह का शिशु बच गया, इसलिए कहते हैं जाको राखे साइयाँ मार सके न कोय।
- जल में रहकर मगर से वैर - जिसके सहारे रहना, उसी से शत्रुता रखना
वाक्य - अगर तुम्हें यहाँ काम करना है, तो मैनेजर से बैर मत लो। जल में रहकर मगर से वैर नहीं रखा जाता।
- जो गरजते हैं, वे बरसते नहीं - अधिक बोलने वाले कुछ काम नहीं करते
वाक्य - अरे! वह बोलता है तो बोलता रहे, वह मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकता। जो गरजते हैं, वे बरसते नहीं।
- जैसी करनी, वैसी भरनी - कर्म के अनुसार फल मिलना
वाक्य - राजू (नौकर) अपने मालिक के घर से ही चोरी करता पकड़ा गया। मालिक ने उसे घर से बाहर निकाल दिया। सच है, जैसी करनी, वैसी भरनी।
- जितने मुँह, उतनी बातें - प्रत्येक की राय अलग-अलग होना
वाक्य - माधवराम के बेटे की मृत्यु के बारे में अभी कुछ पता नहीं चला कि उसने आत्महत्या की या किसी के द्वारा मारा गया, परन्तु लोग तो अभी भी कई तरह की बातें करते हैं। सच है जितने मुँह उतनी बातें हो रही हैं।
- जैसे को तैसा - जो जैसा करे उसे वैसा ही फल देना
वाक्य - दर्जी ने हाथी की सूँड में सूई चुभाई, तो हाथी ने अपनी सूँड में कीचड़ वाला पानी भरकर उसकी दुकान पर पड़े कपड़ों पर फेंक दिया। ठीक है - जैसे को तैसा।
- डूबते को तिनके का सहारा - कठिनाई में थोड़ी-सी सहायता भी काम आती है।

वाक्य - उसकी नौकरी छूट गई है। वह निराश है। उसे किसी और जगह नौकरी मिलने की बँधस बँधाओ। सच है डूबते को तिनके का सहारा।

- थोथा चना बाजे घना - छोटा व्यक्ति अधिक घमंड करता है
वाक्य - अरे प्रकाश के चक्कर में पड़कर अपना समय नष्ट न करो। उसकी तो वही हालत है - थोथा चना, बाजे घना।
- दूध का दूध पानी का पानी - निष्पक्ष न्याय होना
वाक्य - तुमने चालें तो बहुत चलीं, पर जज के फैसले ने दूध का दूध पानी का पानी कर दिया।
- दूध का जला छाछ भी फूँक-फूँक कर पीता है - एक बार हानि उठाने वाला सतर्क हो जाता है
वाक्य - दवाई से एलर्जी होने के बाद भानु हर दवाई डॉक्टर को दिखाकर ही खाता है। इसे कहते हैं दूध का जला छाछ को भी फूँक - फूँक कर पीता है।
- दूर के ढोल सुहावने - हर वस्तु दूर से अच्छी लगती है
वाक्य - शहरों की चकाचौंध देखकर, यहाँ आने वालों को जल्दी ही यहाँ की कठिनाई भरी ज़िंदगी का पता चल जाता है। सच ही है दूर के ढोल सुहावने होते हैं।
- नौ नकद न तेरह उधार - हाथ में आई हुई चीज़ ही अच्छी लगती है
वाक्य - आप कह रहे है कि मेरे पास 80 रुपए हैं। जब मेरे पास सौ रुपए इकट्ठे हो जाएँगे, तो मैं इकट्ठे पैसे ही आपको दे दूँगा। दुकानदार बोला, " भाई मुझे 80 रुपए ही दे दो। नौ नकद न तेरह उधार।
- नया नौ दिन पुराना सौ दिन - आज़माई हुई पुरानी चीज़ नई चीज़ से अधिक समझी जाती है
वाक्य - कल ही यह मेज़ लाए हैं और आज ही इसकी टाँग टूट गई है और वह कुर्सी बीस वर्ष से हमारे घर में है,

हिली तक नहीं। यूँ ही नहीं कहते हैं कि नया नौ दिन पुराना सौ दिन।

- नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली - आयुपर्यंत पाप करके अंत समय माला पकड़कर बैठ जाना

वाक्य - युवावस्था में वह नामी चोर रहा है और अब समाधि लगाकर माला जपता है। इसे ही कहते हैं, नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली।

बच्चो! अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। प्रश्न सुनकर आप अपनी ऑडियो को तीन मिनट का विराम देंगे तथा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे।

प्रश्न 1. लोकोक्ति से आप क्या समझते हैं ?

प्रश्न 2. निम्नलिखित के लिए उपयुक्त लोकोक्ति लिखो :-
(क) जिसके सहारे रहना उसी से शत्रुता रखना

प्रश्न 3. 'दूध का दूध पानी का पानी' लोकोक्ति का अर्थ लिखिए।

बच्चो! उत्तर लिखने के लिए दिया गया समय अब समाप्त हो चुका है। आशा करती हूँ कि आपने पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिख लिए होंगे। उन प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं :-

उत्तर 1. लोकोक्ति एक अनुभवयुक्त वाक्य है, जो कि एक लोक - प्रसिद्ध कहावत भी होती है। इसमें किसी अप्रस्तुत कथन का सहारा लेकर प्रस्तुत अर्थ को प्रकट करने की क्षमता होती है।

उत्तर 2. जिसके सहारे रहना उसी से शत्रुता रखना के लिए उपयुक्त लोकोक्ति है - जल में रहकर मगर से वैर।

उत्तर 3. 'दूध का दूध पानी का पानी' लोकोक्ति का अर्थ है - निष्पक्ष न्याय होना।

बच्चो ! अब आगे दी गई लोकोक्तियों को पढ़ेंगे व समझेंगे। आपका ध्यान इसी ओर ही केन्द्रित होना चाहिए।

- नाच न जाने आँगन टेढ़ा - काम करना स्वयं आता नहीं परन्तु बहाने बनाना

वाक्य - मोहन को वर्णमाला का तो ज्ञान नहीं, परन्तु लिखने के समय कभी कहता है स्याही अच्छी नहीं है, कभी कहता है कागज़ साफ़ नहीं। अपने अज्ञान को छिपाने के बहाने बनाता है। ठीक है नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

- न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी - झगड़े की जड़ मिटा देना

वाक्य - दोनों बच्चे एक साइकिल के पीछे लड़ते रहते हैं कि मैंने तो उस साइकिल को बेच ही दिया। न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

- धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का - जो न इधर का रहे न उधर का

वाक्य - लक्ष्मीदास ने नौकरी छोड़कर सारी पूँजी व्यापार में लगा दी, किंतु उसमें घाटा पड़ गया। उसकी वही दशा हुई कि धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का।

- बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ ते होय - बुरे कामों का फल अच्छा नहीं हो सकता

वाक्य - सारा जीवन तो लोगों को सताते रहे, अब किसी से मदद की उम्मीद बेकार है। सच ही है, बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ ते होय।

- मुँह में राम बगल में छुरी - मित्रता का दिखावा करने वाले शत्रु के विषय में कहा जाता है

वाक्य - अरे तुम रमेश बॉबी पर विश्वास करते हो। उसकी तो यह हालत है कि मुँह में राम बगल में छुरी।

- रस्सी जल गई पर बल न गया - प्रभुता और शक्ति समाप्त होने पर भी अकड़ न जाना

वाक्य - जनाब आजकल भूखे मर रहे हैं, लेकिन बात अब भी नवाबों जैसी करते हैं। रस्सी जल गई पर बल न गया।

- साँप भी मर जाए, लाठी भी न टूटे - काम भी बन जाए और हानि भी न हो
वाक्य - कोई युक्ति निकालो, जिससे सीमेंट भी मिल जाए और रिश्वत भी न देनी पड़े यानि साँप भी मर जाए लाठी भी न टूटे।
- साँच को आँच नहीं - सत्य को कोई डर नहीं होता
वाक्य - जब पुलिस आतंकवादी की खोज करते - करते गाँव की तलाशी लेने गई तो सरपंच ने अनुमति देते हुए कहा साँच को आँच नहीं।
- यथा राजा तथा प्रजा - जैसा मालिक वैसा नौकर
वाक्य - जब मालिक को ही फ़ैक्टरी के लाभ - हानि का पता नहीं, तो नौकर भी क्यों ध्यान देंगे। यथा राजा तथा प्रजा।
- सावन हरे न भादों सूखे - सभी हालातों में एक - सा रहना
वाक्य - रामलाल की जब छोटी दुकान थी, तब भी वह साधारण कपड़े पहनता था और अब तो उसका व्यापार लाखों रुपयों का हो गया है फिर भी वह बदला नहीं। इसे कहते हैं सावन हरे न भादों सूखे
- सहज पके सो मीठा होय - जो काम धीरे से हो वह पक्का होता है
वाक्य - तुम उतावली करके बना बनाया खेल बिगाड़ लोगे। तुम्हें मालूम होना चाहिए कि सहज पके सो मीठा होय।
- हाथ कंगन को आरसी क्या - प्रत्यक्ष दिखाई पड़ने वाली बात के लिए प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती
वाक्य - जब मैंने खुद तुम्हें चोरी करते देखा है तो गवाहों की क्या आवश्यकता। हाथ कंगन को आरसी क्या।
- हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और - बाहर से कुछ और अंदर से कुछ और
वाक्य - आजकल सब धर्म के नाम पर अपना घर भरने में लगे हैं। उनका तो वही हाल है हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और।

कक्षा - दसवीं शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा
विषय - हिन्दी व्याकरण (लोकोक्तियाँ)

• होनहार बिरवान के होत चिकने पात - योग्य व्यक्ति के लक्षण बचपन में ही दिखाई देने लगते हैं
वाक्य - सरोजनी नायडू ने पाँच वर्ष की उम्र में कविता लिखकर सबको हैरान कर दिया, तो सभी ने कहा होनहार बिरवान के होत चिकने पात।

बच्चो! हमारी ये लोकोक्तियाँ अब समाप्त हो चुकी हैं। आशा करती हूँ कि आपने इन्हें ध्यानपूर्वक सुना व समझा होगा। सभी छात्र इन लोकोक्तियों के अर्थ को समझते हुए इन पर आधारित कहानी बनाने का प्रयास भी करेंगे।

गृहकार्य

सभी छात्र आज करवाई गई इन लोकोक्तियों को (पृष्ठ संख्या 319, 320 एवं 321 (छत्तीस से चौंसठ तक) पर दिए) अपनी-अपनी व्याकरण की उत्तर-पुस्तिका में लिखेंगे एवं इन्हें याद भी करेंगे।

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]